SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स्वर्ण रेखा*

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात) का कार्यालय, रांची

झारखण्ड - 834 002

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

कर्तव्य भवन

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह

50

(1975-2025)

राजभाषा – भारतीयभाषाणां मैत्रीसूत्रम्

साबरमती आश्रम

सत्यमेव जयते

अंक- प्रथम

स्वर्ण रेखा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मुख्य संरक्षक

श्री जितेंद्र सुधाकर करपे

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात)

संरक्षक

श्री रौनक रंजन

उप-निदेशक (मुख्या.एवं प्रशा.)

परामर्श दाता

श्री एम एस डहरिया, निदेशक

श्री सुब्रत कुमार सेठी, उप निदेशक

प्रधान संपादक

श्री योगेश कुमार मिश्र

सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री मदन कुमार सिंह, व.लेप.अधि, श्री आनंद कुमार पाण्डेय, व.लेप.अधि

श्री संजीव कुमार, व.लेप.अधि, श्रीमती सुजाता कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक

सहयोग :

श्री मुकेश कुमार होता, स.लेप.अ., श्री चंदन कुमार, स.लेप.अ., श्री दिलीप कुमार, डी ई ओ

प्रकाशक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात),

मेकॉन भवन, रांची - 834 002

'स्वर्ण रेखा' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार और तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही वे उसके प्रति उत्तरदायी हैं।

संदेश

'स्वर्ण रेखा' के सभी पाठकों, लेखकों और हिंदी प्रेमियों को पत्रिका के प्रथम – अंक के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनाएं। यह हर्ष का विषय है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), रांची अपनी पत्रिका 'स्वर्ण रेखा' का पहला अंक निकालने जा रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्य को उजागर करने का माध्यम पत्र-पत्रिकाएं होती हैं। पत्र-पत्रिकाएं समाज की दिशा-निर्देशिका मानी जाती हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति देने में यह पत्रिका एक बड़ा मंच है, जिसके माध्यम से महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), रांची के सभी सदस्य अपने संगठित प्रयासों से इसे एक नई ऊँचाई प्रदान कर रहे हैं। सरकारी कार्यालयों में चली आ रही अंग्रेजी भाषा को प्रतिस्थापित करने के लिए सरकार की राजभाषा नीति बनी, नियम अधिनियम बने और समय-समय पर आदेश जारी होते रहे हैँ। उसी का परिणाम हैं कि आज सरकारी कार्यालयों में काम-काज हिंदी में होने लगा है। लेकिन हमें नियमों-अधिनियमों पर जोर नहीं, बल्कि हृदय से अपनी भाषा के प्रति प्रेम जगाना जरूरी है। जब तक स्वयं प्रेरित होकर किसी काम को न किया जाए तब तक उसके ठोस परिणाम सामने आने मुश्किल होते हैं। हिंदी के प्रयोग में बहुत क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग न किया जाए इसलिए राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट rajbhashavibhag.gov.in पर ई-महाशब्दकोश उपलब्ध कराया है जिसके अंतर्गत लगभग 5000 प्रशासनिक शब्दों की एक सरल शब्दावली दी गई है। इसका अधिकाधिक प्रयोग किया जाए तो सरल शब्दों का प्रयोग करना और आसान होगा।

मैं पत्रिका के संपादक वर्ग को उनके सराहनीय कार्य के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक रोचक और लाभप्रद होगा, अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी लेखकों और कर्मचारीवृंद को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(जितेंद्र सुधाकर करपे)

महानिदेशक

संदेश

वार्षिक हिंदी पत्रिका 'स्वर्ण रेखा' के प्रथम अंक का प्रकाशन कार्यालय में हिंदी भाषा और साहित्यिक लेखन के प्रति उत्तरोत्तर बढ़ती रुचि एवं लगन का द्योतक है जो कि अत्यंत खुशी और गौरव की बात है।

भाषा संस्कृति तथा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। आज हिंदी भारत की संपर्क भाषा बनने की ओर अग्रसर होने के साथ-साथ विश्व पटल पर भी अपना स्थान बनाने में सफल रही है। सोशल और इलेक्ट्रानिक मीडिया में भी हिंदी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। 'स्वर्ण रेखा' के इस अंक में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की नवीन रचनाओं में अभिव्यक्त उनके विविध दृष्टिकोणों एवं विचारों से यह पत्रिका बहुत ज्ञानवर्धक, रोचक एवं समृद्ध बन गई है।

मैं 'स्वर्ण रेखा' को लोकप्रिय तथा स्तरीय बनाए रखने हेतु राजभाषा अनुभाग और इस पत्रिका के प्रकाशन में जुटे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी नवीन मौलिक कृतियों के रूप में आप सभी का अमूल्य साहित्यिक सहयोग मिलता रहेगा।

पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता के लिए शुभकामनाएं और शुभेच्छाएँ है।

(रौनक रंजन)

उप-निदेशक (मु.एवं प्रशा.)

प्रधान संपादक की कलम से

आदरणीय पाठकगण,

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात) का कार्यालय, राँची, झारखंड की 'स्वर्ण रेखा' का प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

'स्वर्ण रेखा' में कई मायनों में सुंदर मिश्रण और संतुलन कायम करने का प्रयास किया गया है। एक ओर वरिष्ठ रचनाकारों की रचनाएं शामिल की गई हैं तो दूसरी ओर नवोदित लेखकों को भी स्थान दिया गया है। गंभीर रचनाएं हमें कुछ सोचने को मजबूर करती हैं तो हल्की-फुल्की रचनाएं हमें आनंदित करती हैं। इसमें अगर जीवन दर्शन हैं, तो मनोरंजन भी है। पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विचारों की अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध कराती हैं। कार्यालय के विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिंदी भाषा को लेकर एक उत्साह का माहौल देखने को मिला है। हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी गीतों, स्वरचित कविताओं, लेखों, भाषणों में बड़ी तादाद में कर्मियों के उत्साह को देखा गया है।

पत्रिका का प्रत्येक अंक सदैव समन्वित प्रयास का प्रतिफल होता है। अत: मैं उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष, किसी भी रूप में पत्रिका में अपना सहयोग दिया है। मैं कार्यालयाध्यक्ष सह महानिदेशक महोदय का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करके हमारा उत्साहवर्धन किया है। मैं कार्यालय के उप-निदेशक महोदय के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने हर सृजनात्मक प्रस्ताव और पहल को भरपूर प्रोत्साहन देते हुए समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन भी किया है। मैं संपादक मंडल का भी आभारी हूँ जिन्होंने रचनाओं के मोतियों को पिरोकर यह साहित्यमाला तैयार की है।

पत्रिका को पठनीय, मनोरंजक तथा उत्कृष्ट बनाने के सभी संभव प्रयास किए गए हैं। आशा है कि आपको 'स्वर्ण रेखा' का यह अंक पसंद आएगा। 'स्वर्ण रेखा' के आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए हम दृढ़संकल्प हैं। आपके सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत हैं ताकि पत्रिका सच्चे अर्थों में हम सभी का कलात्मक और आकर्षक प्रतिबिंब बन सके।

योगेश कुमार मिश्र

सहायक निदेशक (राजभाषा)

विषय सूची

क्र. सं.	विषय-वस्तु	पृष्ठ सं.
1.	चलो शुरु से शुरू करते है	14
2.	ख्वाब	14
3.	प्रेम को रहने दो	15
4.	"डुमरी का श्राप मुनगा"	16
5.	नवग्रह : ज्योतिषीय दृष्टिकोण	17
6.	राम से दूर कैसे जाओगे	23
7.	शिक्षा का जीवन में महत्व	25
8.	युवाओं की जिंदगी - एक कशमकश (व्यंग्यात्मक)	29
9.	नए कर्मचारियों की व्यथा	29
10.	हॉकी की जादूगरन	30
11.	हमारी मातृभाषा हिन्दी ही राजभाषा की अधिकारिणी क्यों	33
12.	एक इंच मुस्कान	35
13.	मुझे नींद नहीं आती (काम के कारण)	35
14.	चीर-हरण	36
15.	कलियुग में जगन्नाथ	37
16.	सपने हुए पूरे	38
17.	हिंदी पखवाड़ा की कुछ झलकियां	40
18.	हिंदी पखवाड़ा के अनुसरण में सुंदर चित्रकारी का प्रदर्शन	44

चलो शुरु से शुरू करते है

- सुश्री सलोनी सिन्हा,
लेखापरीक्षक

चलो शुरू से शुरू करते हैं
हर बात में जो डरते हैं
जीने से ज्यादा मरते हैं।
औरों पर बहुत, खुद पर जो थोड़ा कम यकीन करते हैं
एक बार संवरने के लिए,
सौ बार जो बिखरते है।
कभी दुनिया से
कभी खुद से ही लड़ते हैं।
चलो सारी कमियों को भूल कर,
खुशियों की ओर बढते हैं
चलो शुरू से शुरू करते हैं।

ख्वाब

खुबसूरत ख्यालों को
शब्दों में बुनना चाहती हूँ।
सपनों की मंजिल तक जो पहुँचे,
वो राह चुनना चाहती हूँ।
ख्वाब बहुत ऊचें देख लिए हैं शायद,
उन्हें मुकम्मल करने को
बेपंख ही उड़ना चाहती हूँ।

प्रेम को रहने दो

- श्री शंभुनाथ दुबे,
एम.टी.एस.

प्यार मोहब्बत धोखा है।
कईयों के घर को फूंका है।
कितनों ने जान गवांई है।
पर किस्मत में जुदाई है।
लैला, मजनू हीर और रांझा.
सबने यही समझाई है।
पर सदियों से है यह चल रहा
नये जमाने में सब बदल रहा
अब प्यार में भी तकनीक नई आई है।
चार दिन की मोहब्बत में।
ब्रेकअप की दौड़ लाई है।
चारो तरफ बस धोखा ही धोखा
ऐसा प्यार का शोर है
प्रेम में धोखा, प्यार में धोखा
धोखा पर टिकी जिन्दगानी है।
बेबसी खुदग़र्जी तन्हाई
की कहानी है।
प्रेम की इस दुनियाँ में।
अमर प्रेम को रहने दो
प्रेम करो कृष्ण-राधा सा
दाग ना इस पर आने दो।

"डुमरी का श्राप मुनगा"

- श्रीमती सुजाता कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक

बहुत से लोग मुनगा के नाम से अनभिज्ञ होंगे क्योंकि मुनगा के जितने गुण है उतने नाम भी प्रचलित है। झारखण्ड में कही इसे मुनगा कहते है तो कहीं सहजन, तो कहीं–कहीं इसे मोरिंगा भी कहते हैं।

मैंने तो बचपन से इसे मुनगा के नाम से ही जाना है। मेरे घर गिरिडीह में ऐसे तो बहुत तरह के पेड़–पौधें है लेकिन शुरू से मुनगा सब के नजरों में रहा है। कभी मुनगा का साग तो कभी मुनगा के फूल के लिए और तो कभी मुनगा के फल जिसे हम सिटी (सहजन) बोलते हैं जिसकी सब्जी स्वादिस्ट ही नहीं बल्की बहुत फायदेमंद भी होती है, मोहल्ले के लोग मांग कर भी ले जाते थे या यूँ कहूँ कि अभी भी ले जाते हैं। मुनगा का साग ऑल टाइम डिमांड में रहता था। कियोंकि दाल में इनके पत्तों (साग के तौर पर इस्तेमाल) को डालने से इसका स्वाद तो बढ़ता ही है साथ ही इसमें पोषक तत्वों की भी भरमार है।

मुनगा के पत्तों और बीजों में कई पोषक तत्व पाये जाते है इनके सेवन से कई तरह की बीमारियों में आराम मिलता है। मुनगा के फायदों कि बात करे तो इसमें एंटीऑक्सिडेट विटामिन– ए, सी, ई और के कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, और जिंक जैसे पोषक तत्व होते हैं । इसमें एंटी बायोटिक, एंटी–इफ्लेमेटरी, एंटी–कैंसर जैसे गुण है। यह इम्युनिटी मजबूत करता है, ब्लड प्रेशर कोलेस्ट्रोल लेवल कंट्रोल करता ही है साथ ही पाचन तंत्र बेहतर करता है। यही नहीं एनीमिया, हाई बीपी और थायराइड की समस्या में भी आराम मिलता है।

तो बात यह है कि फिर मुनगा श्राप कैसे हुआ? जी हां ! इतना गुणकारी पेड़ श्राप तो हो ही नहीं सकता। दर असल यह जवाब मेरा था, मेरी मम्मी जी को (सास को)! किस्सा यह है कि मै जब अपने पापा के यहाँ (गिरिडीह) से राँची आ रही थी तो गिरिडीह के एक ब्लॉक डुमरी से गुजरते हुए धीरे–धीरे आ रही थी ठंड के मैसम में मुनगा के पेड़ सफेद फूलों से लह–लहा रहे थे। लगभग सभी घर के सामने, रास्ते के किनारों पर भी मुनगा लगा हुआ था। जब मैने देखा बाजार में इतने महंगी बिकने वाले फुल इतने लह–लहा रहे है तो आश्चर्यपूवर्क मम्मी जी से कहा– मम्मी जी यहाँ मुनगा कितना सारा है खरीदने की जरूरत ही नहीं किसी को। ना मागंने की ही। तब उन्होंने बताया कि "डुमरी को श्राप मिला है मुनगा का!" कहीं भी फेंक दो ऐसे ही लग जायगा। जब मुनगा रास्ते में किनारे–किनारे दिखना शुरु हो जाए, तो समझो डुमरी पहुँच गए। इस पर मैंने कहा! मम्मी जी की बात तो सही है लेकिन यह श्राप नहीं वरदान है। क्योंकि मुनगा तो बड़ा डिमांडिंग पेड़ है। पत्तें, फूल, सब्ज़ी सभी को खाया जाता है। पत्तों को दाल में डालकर बचपन से ही खा रहे हैं लेकिन आजकल तो इसे सुखाकर कहीं पाउडर तो कहीं सूखे पतें ही बेचे जा रहे है। यहाँ तक कि अमेजन फ्लीपकार्ट जैसे– ई–कॉमर्स कंपनियों पर भी इसे बेचा जा रहा है।

गिरिडीह के डुमरी में पारसनाथ जैन तीर्थ स्थल के लिए तो पहले से ही प्रसिध्द है आज मुनगा का भी पता चला। और फिर यूँ ही हस्सी–ठहाकों के साथ अपनी मंजिल को राँची पहुँचे।

नवग्रह : ज्योतिषीय दृष्टिकोण

- श्री योगेश कुमार मिश्र
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आकाश में अनेक पिंडों को देख कर मन में रोमांच होता है। आम जीवन में इन्हीं आकाशीय पिंडो को ग्रह, नक्षत्रों और तारों के रूप में जाना जाता है। ज्योतिष में इनकी व्याख्या विशद रूप से की गई है।

ज्योतिष में नौ ग्रह हैं यथा सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि राहु और केतु और इसके साथ ही हैं 27 नक्षत्र हैं जो व्यक्ति पर अपना असर डालते हैं।

पहला परिचय ग्रहों के राजा सूर्य की।

ग्रह राज सूर्य

दिवाकरौ हि विश्वात्मा मन: कुमुदबांधवा:।

समस्त संसार की आत्मा सूर्य हैं। संतान को आत्मज कहा जाता है। जिसका सीधा अर्थ है आत्मा से जन्मा हुआ। आत्मा के नैसर्गिक कारक सूर्य हैं। **आपके घर में आपके पिता ही आपके सूर्य हैं, उनकी सेवा, उनकी बात मानना, उन्हे महत्व देना आपके सूर्य से अच्छे फल के प्राप्त करने की गारंटी है।**

सूर्य पिता के भी कारक हैं। नवम भाव के स्वामी, नवम भाव और सूर्य की स्थिति से पिता के बारे में विचार किया जाता है।

कालपुरुष की कुंडली में पंचम भाव में सिंह राशि पड़ती है। सिंह राशि के स्वामी सूर्य हैं अतः संतान, विद्या और पंचम से पंचम नवम भाव होता है और नवम से नवम पंचम भाव होता है। दोनो ही धर्म त्रिकोण के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। ऐसे में सूर्य की भूमिका असाधारण हो जाती है।

राजानौ भानु हिमगु नेता ज्ञेयो धरात्मज:

ग्रहों के राजा सूर्य हैं या यह भी कह सकते हैं कि सौर परिवार के मुखिया सूर्य हैं। राजा की प्रकृति और पिता की प्रकृति या प्रवृत्ति एक ही होती है। राजा में शासन के गुण होते हैं। चाहे कुछ भी हो सूर्य अपने समय से उदित और अस्त होते हैं यही अनुशासन उनका मुख्य गुण है। भगवान सूर्य हनुमान जी के गुरु हैं और सदाशिव भोलेनाथ के शिष्य।

जहां एक और एकदश रुद्र में से एक शंकर सूर्य को शिक्षा दे रहे हैं वहीं हनुमान के रूप मे रुद्र पुनः वापस उनसे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जहां सूर्य अपने ही पुत्र शनि से शत्रुवत हैं वहीं हनुमान जी को सूर्य और शनि दोनो अत्यधिक पसंद करते हैं।

यही हनुमान जी की विशेषता है, दो विषम ध्रुव पर भी एक समान प्रियता पा लेते हैं.....

भगवान सूर्य का रंग रक्त लालिमा लिए हुए है।

"रक्तश्यामो दिवाधीसो, गौरगात्रो निशाकरः"

सूर्य नारायण और मंगल का वर्ण क्षत्रिय है। राजा और सेनापति एक जैसे वीर, तेजस्वी और बलशाली होने चाहिए। बाहुबल अनिवार्य घटक है।

गुरुशुक्र विप्र वर्णौ कुजोर्को क्षत्रियौद्विजः...

देह में सूर्य हड्डी के प्रतिनिधि हैं, प्रकृति में वे मोटे वृक्षों के कारक हैं।

"स्थुलान जनयति त्वर्को...."

ऋतुओं में सूर्य ग्रीष्म के कारक हैं (कुजभान्वोश्च ग्रीष्मकः) इनकी स्वराशि और त्रिकोण राशि दोनो सिंह ही है। सिंह राशि में 20 अंशो तक ये मूल त्रिकोण(1, 5 तथा 9 वां भाव) के माने जाते हैं तथा उसके शेष 10 डिग्री में स्वराशि होते हैं।

सूर्य दशम भाव में दिग्बली होते हैं तथा मेष राशि में उच्च एवम तुला में इनकी नीच राशि मानी जाती है।

अब प्रश्न यह है कि मेष में उच्च और तुला में नीच क्यों...?

मंगल दो राशियों के स्वामी हैं। मेष और वृश्चिक। वृश्चिक मंगल की साधारण राशि है और मेष मंगल की मूल त्रिकोण राशि है। जहां सूर्य राजा हैं, वही मंगल सेनापति हैं। बिना सेना और शक्ति के राजा का प्रभाव कम जाता है।

मंगल की मूलत्रिकोण राशि मेष में सूर्य शक्तिशाली हो जाते हैं। प्रखर सूर्य व्यक्तिव को तेजस्वी, स्वाभिमानी, उदार, क्रूर और अभिमानी बना देते हैं।

सूर्य, मंगल, क्षीण चंद्रमा, अस्त बुध, शनि, राहु और केतु ये पापग्रह माने जाते हैं।

बृहद पाराशर होरा शास्त्र ज्योतिष का सर्वाधिक प्रमाणिक ग्रंथ है। भगवान के दशावतारों में चार अवतार यथा श्री राम, कृष्ण नृसिंह एवम वराह को परमात्मा का पूर्ण अवतार और शेष को जीवांश अवतार माना गया है।

"रामः कृष्णश्च भो विप्र! नृसिंहः सूकरस्तथा।"

एते पूर्णावताराश्च हंये जीवांशकांविता।।

भिन्न अवतार भी इन्ही नौ ग्रहों से आते हैं पुनः उन्ही में समाहित हो कर अपने-अपने लोक में गमन करते हैं।

जैसे श्री राम सूर्य से और भगवान श्री कृष्ण चंद्रमा और नृसिंह मंगल से आए हैं।

सूर्य का विभिन्न भावों में अलग-अलग फल इस प्रकार है।

पहला भाव (लग्न): सूर्य लग्न में हो तो व्यक्ति में स्वयं की पहचान और आत्मबल का स्तर उँचा होता है। व्यक्ति में नेतृत्व का गुण जन्मजात होता है।

दूसरा भाव (धन): सूर्य के धन भाव में होने से व्यक्ति को आर्थिक स्थिति में स्थिरता मिलती है। यह धन संबंधित प्रक्रियाओं में सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

तीसरा भाव (भाग्य): सूर्य के तीसरे भाव में होने पर व्यक्ति साहसी होता है। सरकारी नौकरी में लाभ मिलता है।

चौथा भाव (सुख): उच्च पद का लाभ मिलता है।

पाँचवाँ भाव (प्रेम और शिक्षा): उच्च शिक्षा दिलाते हैं।एवं बुद्धिमान बनाते हैं

छठा भाव (शत्रु): सूर्य के छठे भाव में होने से व्यक्ति को शत्रुओं से निपटने की क्षमता मिलती है। किंतु नेत्र रोग भी हो सकता है।

सातवाँ भाव (साथी और साझेदारी): सूर्य के सातवे भाव में होने से दाम्पत्य जीवन में कठिनाई होती है। उच्च पद मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

आठवाँ भाव (मृत्यु): सूर्य के आठवें भाव में होने पर व्यक्ति गूढ ज्ञान का अनुभव होता है। अचानक लाभ का योग बन जाता है।

नौवाँ भाव (यात्रा और शिक्षा): सूर्य के नौवे भाव में होने से व्यक्ति को यात्रा, उच्च शिक्षा, और धार्मिक गतिविधियों में रुचि होती है।

दसवाँ भाव (करियर और सार्थक जीवन): सूर्य के दसवे भाव में होने से व्यक्ति को करियर में सफलता और सार्थक जीवन की प्राप्ति होती है।

ग्यारहवाँ भाव (लाभ): यह स्थान व्यक्ति को समृद्धि, सामाजिक संबंधों में आर्थिक लाभ, और सामाजिक सेवा में सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है।यहां सूर्य विशिष्ट कारक हो जाते हैं। धन की कभी कमी नही रहती।

बारहवाँ भाव (व्ययकाल और त्याग): सूर्य के बारहवे भाव में होने से व्यक्ति में अध्यात्म के प्रति श्रद्धा और विदेश से लाभ और यात्रा में रत रहने का योग बन जाता है। दाहिनी आंख प्रभावित होती है।

सूर्य की शांति।

ज्योतिष में एक सिद्धांत है कि जो ग्रह आपको परेशान करने के लिए उत्तरदाई हैं उनकी शांति करनी चाहिए और जो आपके लिए शुभ हैं उनके रत्न पहन कर उनको पुष्ट करना चाहिए।

सभी ग्रह किसी जातक के लिए कभी शुभ और कभी अशुभ होते रहते हैं यह लग्न और राशि पर निर्भर करता है।

मेष राशि केलिए जहां सूर्य पंचमेश हो कर अत्यंत शुभ है वहीं मकर के लिए अष्टमेश हो कर मारक हो जायेंगे। तुला के लिए एकादशेश हो कर अत्यंत अशुभ होंगे।

सूर्य खराब हैं यह कैसे पता चलेगा....

मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुंभ, मीन के लिए नैसर्गिक रूप से अशुभफलदायी हो गए।

लेकिन अगर इन लग्न को छोड़ कर शेष लग्न के लिए शुभ हो कर भी अशुभ हो सकते हैं।

वो इस तरह से कि अगर सूर्य अपनी नीच राशि तुला में हों, शनि द्वारा दृष्ट हों राहु या केतु से युति (इनके साथ किसी भाव या राशि मे बैठे हों)।

यहां अशुभ का तात्पर्य शास्त्र की दृष्टि से जुड़ा हुआ है।

संसार की दृष्टि से जो शुभ हो वह शास्त्र की दृष्टि से भी शुभ हो आवश्यक नही है।

जैसे एकादश भाव कामना पूर्ति केलिए अच्छा है लेकिन यह मोक्ष का भाव द्वादश का 12 वां (व्यय भाव) है। यह स्वाभाविक है कि अगर हम कामना के बंधन में बंधेंगे तो मोक्ष पर सीधा खराब असर पड़ेगा।

शास्त्र के अनुसार हमारा जीवन जन्म मृत्यु के बंधन को काटने को हुआ है ना कि विभिन्न भोगों को भोगने हेतु।

जिनके सूर्य अशुभ हैं उनके कुछ लक्षण हैं। जरूरी नहीं कि सारे लक्षण मिल जाएं।

नमक अधिक खाना

पिता से सहयोग नहीं मिलना/ या बहुत कम मिलना

आत्मविश्वास में कमी।

नौकरी में उच्चअधिकारियों से बिगड़ा रहना।

सरकार की तरफ से लाभ नहीं होना।

त्वचा में समस्या।

चेहरा बुझा हुआ होना

दाहिनी आंख में समस्या।

अहंकार में वृद्धि आदि।

क्या करें???

गणेश जी को मोदक पसंद है, देवी को अर्चना, महादेव को अभिषेक प्रिय है, हरि को उपकार और सूर्य नारायण को अर्घ्य, परिक्रमा और नमस्कार।

आप यदि मेहमान के आने से पहले ही स्टेशन पहुंच जाएं तो मेहमान बहुत प्रसन्न होंगे, उनके आने के तुरंत बाद पहुंचते हैं तब भी वे कम से कम आपके आने से प्रसन्न तो होंगे ही और यदि वे आपकी आशा ताकते रहे और आप आ न सकें और उन्हें फोन द्वारा स्वागत करें तो वे कितना प्रसन्न होंगे यह सोचने वाली बात है।

सूर्य की आराधना उनके उदित होने से पहले से आरंभ होना चाहिए। बालसूर्य का दर्शन करना चाहिए। उन्हें नमस्कार करना चाहिए।

उनका रंग लाल है अतः लाल वस्त्र, धातु में तांबा, खाद्यान्न में गुड़ आदि दान किया जा सकता है।

सूर्य के वैदिक मंत्र का जप किया जा सकता है।

तांत्रिक मंत्र का भी जप किया जा सकता है। सूर्य का तांत्रिक मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं हौं स: सूर्याय नम:।

एकाक्षरी बीज मंत्र- ॐ घृणि: सूर्याय नम: जप संख्या- 7000 है।

चूंकि यह संख्या सतयुग के लिए है अतः कलयुग में इसका चार गुना जप करना चाहिए अर्थात 28,000। इसका दशांश हवन, तर्पण और मार्जन करना चाहिए, इसके पश्चात ब्राह्मण भोजन दक्षिणा आदि का प्रावधान है।

सभी लोग शॉर्टकट ढूंढते हैं.. कम समय में और कम खर्च में क्या हो सकता है?

कम समय में आप तड़के सुबह उठ कर स्नान आदि कर के भीगे वस्त्र में ही सूर्य नारायण को तांबे के लोटे में शुद्ध जल जिसमें आप गुड़, उड़हुल के पुष्प या कोई लाल पुष्प, सुगंध आदि डाल कर अर्घ्य दे सकते हैं और वहीं खड़े खड़े यथाशक्ति गायत्री मंत्र का मानसिक जप कर सकते हैं।

नवग्रह स्तोत्र के पहले श्लोक का जप भी कर सकते हैं।

पूरा स्तोत्र भी बारह पाठ करने से सभी ग्रहों की शांति हो जाती है।

कुछ न आता हो तो श्री भास्कराय नमः दोहरा सकते हैं।

भगवान केलिए व्रत कैसे करें

सबसे बड़ा व्रत है सूर्य षष्ठी व्रत जिसे छठ भी कहा जाता है।

इसके अलावा आप रविवार को नमक विहीन शुद्ध आहार ले कर भी व्रत कर सकते हैं।

शुभ सूर्य केलिए भी उपरोक्त आराधना तो अच्छा है ही साथ ही इनकी शुभता में वृद्धि केलिए आप माणिक्य धारण कर सकते हैं।

शेष योग्य ज्योतिषी और ब्रह्मण से सलाह ले कर अपना उपाय कर सकते हैं।

चंद्रमा

नक्षत्रों के स्वामी चंद्रमा को कहा जाता है। चंद्रमा जिस राशि में बैठ जाते हैं वही जातक(व्यक्ति/ बच्चे) की राशि हो जाती है।

चंद्रमा की अपनी राशि कर्क है।

इसके अलावा चंद्रमा वृष राशि में उच्च और वृश्चिक इनकी नीच राशि है।

वृष राशि में चंद्रमा के उच्च हो जाने के पीछे यह एक तर्क हो सकता है कि शुक्र एक स्त्री ग्रह है। एक सौम्य ग्रह दूसरे सौम्य और शुभ ग्रह के स्थान पर अच्छा ही महसूस करेगा।

माता, मौसी और माता समान स्त्री की सेवा करने से चंद्रमा अच्छा परिणाम देते हैं।

चंद्रमा बलवान कब होते हैं और कमजोर कब होते हैं। चंद्रमा जैसे जैसे ढकते जायेंगे वैसे वैसे कमजोर होते जायेंगे। शुक्ल पक्ष के पूर्णिमा को सबसे बलवान होंगे और कृष्ण पक्ष के अमावस को सबसे कमजोर होंगे।

जिनके चंद्रमा कमजोर होंगे वे निश्चय ही मन से कमजोर होंगे।

मन से कमजोर होने का अर्थ है संकल्प पूरा करने में असक्षम। चिड़चिड़ा होना। माता का सुख कम मिलना, पानी की समस्या से जूझना।

किसी जातक (व्यक्ति) का जन्म किस तिथि को हुआ है यह उसके लग्न चक्र को देख कर बताया जा सकता है, महीना भी बताया जा सकता है। सूर्य की स्थिति देख कर माह का विचार होगा और सूर्य से चंद्रमा

कितनी दूरी पर हैं इस से तिथि का विचार हो सकता है।

उदाहरण केलिए सूर्य और चंद्रमा एक साथ एक ही राशि और भाव में हो तो अमावस हो जाता है।

वहीं इसके विपरीत चंद्रमा से सूर्य सातवें घर में हो तो उस दिन पूर्णिमा होगी।

महात्मा बुद्ध तथा गुरु नानक का जन्म पूर्णिमा को हुआ था। जिसे बुद्ध पूर्णिमा और गुरु पूर्णिमा के रूप मे मनाया जाता है।

पूर्णिमा को कोलकाता में पानी का जहाज जिसे लाउंज भी कहते हैं वे नही चलते कारण कि उस दिन उच्च ज्वार उठता है।

इस दिन भावनात्मकता में वृद्धि हो जाती है।

चंद्रमा की प्रसन्नता केलिए पूर्णिमा का व्रत किया जाता है।

भगवान श्री कृष्ण विदुर के घर में साग और केले के छिलके में अद्भुत स्वाद प्राप्त करते हैं क्योंकि उनका मन बड़ा है।

महात्मा बुद्ध सहज ही किसी को क्षमा कर देते हैं उनका मन बड़ा है।

गुरु नानक अपना सर्वस्व त्याग देते हैं क्योंकि मन बड़ा है।

मन मजबूत और बड़ा है इसके पीछे कारण है - चंद्रमा सशक्त है।

मारक (अशुभ) चंद्रमा सबसे अधिक बच्चों को परेशान करते हैं, न्यूमोनिया सर्दी खांसी, फेफड़े की समस्या यह सब चंद्रमा का ही दिया हुआ है।

किसी ग्रह को समझने केलिए उसकी कथा को समझना बहुत जरूरी होता है।

चंद्रमा को भगवान सदाशिव अपने मस्तक पर धारण करते हैं। शिव और सोम का यह अद्भुत संयोग यह सिद्ध करता है कि शिवार्चन से सोम अर्थात चंद्रमा को प्रसन्न किया जा सकता है।

मोती इनका रत्न है। मोती, द्रव्य, रजत और सफेद वस्तुओं पर इनका अधिकार है।

जहां पिता की सेवा से सूर्य कारक शुभ हो जाते हैं वहीं माता की सेवा से चंद्रमा मजबूत हो जाते हैं।

लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण चन्द्र के लोक से धरती पर आते हैं और वापसी भी इसी के लोक से होती है।

किसी भी चीज को श्री गणेश भगवान के नाम से समापन भी भगवन्नाम से करना चाहिए। श्री राम जय राम जय जय राम।

श्री राधे श्याम की सदा जय हो.....

राम से दूर कैसे जाओगे

- श्री योगेश कुमार मिश्र
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राम से दूर कैसे जाओगे
भीतर आत्मा राम है,
तुम हो तब भी राम हैं
नहीं हो तब भी उन्हीं में हो।
सांस में, रोम रोम में
दसों दिशाओं में
जड़ चेतन में
आगम-निगम में
राम रहित न हो सकते हो
ना अभी हो...
राम कथा कहोगे या सुनोगे तो
संशय अवश्य उड़ जायेंगे...
आज जो भी कुतर्क
जन्म ले रहे हैं
वो निर्मूल हो जायेंगे...
शरण में आ जाओ
यही मार्ग है
नही तो जयंत
कभी रावण की तरह
दंडित या आग्नि को अर्पित किए जाओगे
राम की परीक्षा कभी इंद्र
कभी चतुर्मुख लेने आते हैं
कभी-कभी तो नारद भी संशय में पड़ जाते हैं,
राम राम कहते रहो
रटते रहो
उद्धार हो जाता है
चाहे भजन तुम्हे करना पड़े जबरन
एक दिन अश्रु पुरित अक्ष
में राम झलक दिखलाएंगे
यही एक मात्र अवलंब
जिससे स्वयं श्री राम खींचे आएंगे...
देखो ना!
बिना श्री राम के लोग कितने श्रीहीन लग रहे
सारी संपदा के स्वामी के विरुद्ध हो कर
तुम भिक्षुक ही कहलाओगे
आए कितने, गए कितने

आदि अंत में राम नजर आयेंगे

वही शाश्वत हैं...वही अमर हैं

वही ईश्वर वही विधाता हैं

वही श्रीपति एवं श्रीश हैं।

मन के कोने में कहीं तुम भी भज ही रहे हो

सोहम के तैल धारावत में तुम भी सज ही रहे हो

वे तो निर्द्वंद हैं तुम भी द्वंद्व से बाहर आओ

अपने हृदय के अवध देश में राम लला को

भीतर लाओ....

भीतर भी क्या लाना है

सुप्त को ही तो बस जगाना है

कहीं भी तो इश्वर का अवकाश नहीं

कभी घट में

कभी पनघट में

कभी हृदय गह्वर में

अंगुष्ठ मात्र

कभी ब्रह्म नाद

कहीं सोहम् में वो बसता है

कभी खुद में

कभी चहुँ ओर

“वासुदेव सर्वम” में दीखता है।

चलो थोडा और चलें

वो हमें दिखता हो या नहीं

क्या फर्क है

वह हमें निरंतर देखता है यह बड़े

काम की बात है

यह वैसे ही है जैसे

हम भले दीन हीन हों

लेकिन हमारा पिता

बड़े हृदय

बड़े सुख संपदा वाला है।

शिक्षा का जीवन में महत्व

- श्रीमती सुमन
अतिथि रचनाकार

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

अर्थ: विद्या विनय (नम्रता) देती है, विनय से पात्रता आती है। पात्रता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

शिक्षा का सीधा संबंध मानव विकास से है, यह संज्ञानात्मक विकास का द्योतक है। शिक्षा का अर्थ व्यापक है।

शिक्षा विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। इसका देश की आर्थिक समृद्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मानव पूंजी में उल्लेखनीय निवेश के बिना, कोई भी देश दीर्घकालिक आर्थिक प्रगति हासिल नहीं कर सकता

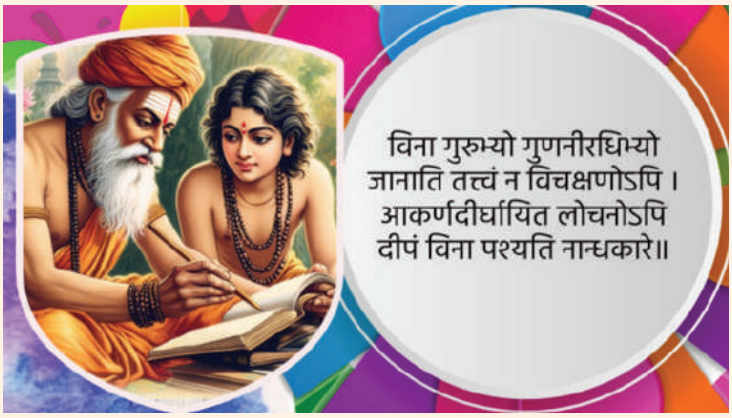

शिक्षा लोगों के खुद के और अपने आस-पास की दुनिया के प्रति दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है। यह उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है। लोगों और समाज दोनों को कई तरह के सामाजिक लाभ प्रदान करती है। यह आर्थिक और सामाजिक प्रगति सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह मानव पूंजी, उत्पादकता, रचनात्मकता, गरीबी में कमी, उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने, तकनीकी प्रगति, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक विकास, स्वास्थ्य जागरूकता और अन्य क्षेत्रों में मदद करती है जहाँ आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है। भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा की इन विभिन्न भूमिकाओं को नीचे बताया गया है।

मानव पूंजी का सीधा संबंध मानव विकास से है। जब मानव विकास होता है, तो राष्ट्र में गुणात्मक और मात्रात्मक प्रगति होती है। मानव पूंजी राष्ट्र के व्यापक विकास को बढ़ावा देने का एक साधन है।

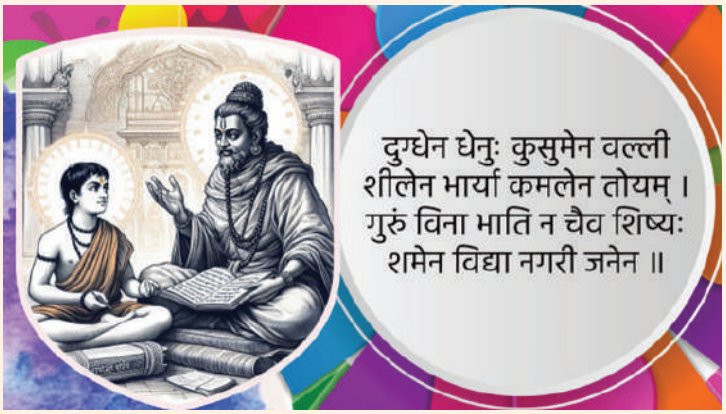

प्रत्येक पीढ़ी में गुणात्मक सुधार के कारण, स्वतंत्रता के बाद से भारत की मानव पूंजी निर्माण की दर में लगातार वृद्धि हुई है। भारत की आबादी की तीसरी पीढ़ी 21वीं सदी के दूसरे दशक में देश के कार्यबल में सक्रिय रूप से काम कर रही है। यह सबसे गुणात्मक श्रेष्ठ मानव संसाधन है।

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत्।
नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम्॥

अनुवाद:

विद्या के समान बन्धु नहीं होता, किसी के लिए विद्या के समान सुहृद् नहीं होता।

विद्या के समान धन नहीं होती, विद्या के समान सुख नहीं होती॥

शिक्षा प्रगति की नींव रखती है, हमारी आर्थिक और सामाजिक खुशहाली के लिए बहुत कुछ करती है। यह आर्थिक दक्षता और सामाजिक सामंजस्य में सुधार के लिए आवश्यक है। यह गरीबों को उनके श्रम के मूल्य और दक्षता को बढ़ाकर गरीबी से बाहर निकालने में मदद करती है। यह श्रम बलों की कुल उत्पादकता और बौद्धिक लचीलेपन में सुधार करती है और श्रमिकों की दक्षता और आय को बढ़ाने में भी मदद करती है जिससे गरीबी और असमानता कम होती है। शिक्षा आज के वैश्विक बाजारों में देश की प्रतिस्पर्धात्मकता सुनिश्चित करने में मदद करती है, जिसे तेजी से बदलती प्रौद्योगिकियों और उत्पादन विधियों द्वारा परिभाषित किया जाता है। शिक्षा बच्चे के विभिन्न सामाजिक या जातीय समूहों के साथ शुरुआती एकीकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ उद्यमशीलता और तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करके राष्ट्र निर्माण और पारस्परिक सहिष्णुता में मदद करती है। मानव पूंजी की धारणा को विकास सिद्धांत द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था, जो शिक्षा को आर्थिक प्रगति सुनिश्चित करने की एक विधि के रूप में देखता है। शिक्षा मानव पूंजी निर्माण का एक महत्वपूर्ण इनपुट है, जो किसी देश के कच्चे मानव संसाधनों को अत्यधिक उत्पादक मानव संसाधनों में बदल देता है।।

आयुः कर्म च विद्या च वित्तं निधनमेव च।
पञ्चैतानि विलिख्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः॥

अनुवाद:

जीवन, कर्म, विद्या, धन और मृत्यु, ये पांच वस्तुएँ गर्भ में ही निश्चित हो जाती हैं॥

विवरण:

यह श्लोक हमें बताता है कि जीवन, कर्म, विद्या, धन और मृत्यु जैसी पांच वस्तुएँ हमारे जीवन के आदर्श मूल्यों के साथ जुड़ी होती हैं। इन्हें हम अपने जीवन में संतुलित रूप से स्वीकार करना चाहिए। विद्या इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तत्त्व है जो हमें सही रास्ता दिखा सकती है और सफलता की ओर आग्रह कर

किसी भी देश में व्यवस्थित मानव पूंजी निवेश को विशेष रूप से महत्वपूर्ण उन्नीसवीं सदी से पहले, नहीं माना जाता था। शिक्षा और प्रशिक्षण पर निवेश काफी मामूली थे। बीसवीं सदी में इसमें नाटकीय रूप से बदलाव आना शुरू हुआ, विज्ञान के अनुप्रयोग से नई वस्तुओं और विनिर्माण की अधिक कुशल तकनीकों का आविष्कार हुआ, शुरुआत में यूनाइटेड किंगडम में और फिर धीरे-धीरे अन्य देशों में फैल गया। शिक्षा, कौशल और ज्ञान प्राप्ति सभी बीसवीं सदी के दौरान किसी व्यक्ति और देश के उत्पादन के महत्वपूर्ण कारक बन गए हैं। बीसवीं सदी को "मानव पूंजी का युग" भी कह सकते हैं, इस अर्थ में कि कोई देश कौशल और ज्ञान को विकसित करने और उसका उपयोग करने में कितनी अच्छी तरह सफल होता है, साथ ही साथ अपनी अधिकांश आबादी के स्वास्थ्य और शिक्षा को आगे बढ़ाता है, यह किसी देश के जीवन स्तर का प्राथमिक निर्धारक है। पिछले कई दशकों के दौरान मध्य पूर्व में बुनियादी शिक्षा तक पहुँच में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। कई राष्ट्र अब माध्यमिक और उच्च शिक्षा तक पहुँच का विस्तार करने के कगार पर हैं, साथ ही सभी स्तरों पर प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता में नाटकीय प्रगति कर रहे हैं। मध्य पूर्वी देश निर्मित वस्तुओं के लिए वैश्विक बाजारों में अधिक एकीकृत हो रहे हैं। इन बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने की उनकी क्षमता, साथ ही वैश्विक सेवा बाजारों में, उनके द्वारा लाई जाने वाली मानव पूंजी की गुणवत्ता से निर्धारित होगी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी नागरिक शिक्षित और संख्यात्मक हों, कि कई लोगों के पास बुनियादी स्तर से परे समस्या-समाधान कौशल की एक विस्तृत श्रृंखला हो, और कुछ के पास विश्व स्तरीय पेशेवर कौशल हों, नए पाठ्यक्रम, बेहतर शिक्षक कार्यक्रम और उच्चतर संज्ञानात्मक कौशल को प्रोत्साहित करने वाले शैक्षणिक तरीकों की आवश्यकता होगी।

विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः।
अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम्॥

अर्थ:

विद्याभ्यास, तपस्या, ज्ञान और इंद्रियों के संयम के माध्यम से विद्या प्राप्त की जा सकती है।

अहिंसा और गुरु की सेवा ही सर्वोत्तम कार्य है॥

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्।
विद्या राजसु पुज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

अनुवाद:

विद्या नाम नर की सबसे बड़ी धन और यश है, जो छिपा हुआ और गुप्त है।

विद्या भोगों को प्रदान करने वाली है, यश की प्राप्ति कराने वाली है, विद्या गुरुओं की गुरु है।

विद्या विदेश यात्रा में मित्र होती है। विद्या परम देवता है।

विद्या राजसभा में पूज्य होती है, इसलिए विद्याविहीन मनुष्य की तुलना पशु से की जाती है।

हम यहाँ यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विकासशील देशों को उच्च शिक्षित और कुशल कार्यबल बनाने के लिए अभी भी शिक्षा में अधिक निवेश करने की आवश्यकता है, जिसके परिणामस्वरूप इन देशों की उत्पादकता में वृद्धि होगी, जो अंततः इन देशों के समग्र विकास और वृद्धि को बढ़ावा देगा। विकसित देशों में अविकसित देशों की तुलना में शिक्षा का स्तर अधिक है जो अधिक उत्पादन और उच्च आय उत्पन्न करने के लिए प्रेरित करता है। सरकार शिक्षा पर अधिक खर्च करने का प्रयास कर रही है। इस प्रकार अर्थव्यवस्था का अधिक विकास हो सकता है। मानव संसाधन के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षित और योग्य लोग सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाते हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि गरीब लोगों और समाज के कमजोर वर्ग को बेहतर गुणवत्ता वाली शिक्षा मिले। शिक्षा में किया गया प्रारंभिक निवेश भविष्य में उच्च आय का स्रोत उत्पन्न कर सकता है। शिक्षा में निवेश से आर्थिक विकास होता है, जो सामाजिक और आर्थिक दोनों तरह की प्रगति को दर्शाता है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि समग्र मानव विकास के लिए हर देश में शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

युवाओं की जिंदगी - एक कशमकश (व्यंग्यात्मक)

- श्री शंभुनाथ दुबे
लिपिक/टंकक (सचिवालय अनुभाग)

खुशकिस्मत हैं वो, जिनके साथ मां-बाप और काम हैं,
वरना देखो बेरोजगारी का क्या अंजाम हैं....!!
उमर बीत गयी एक्जाम में, स्टाईल में, मोबाईल में, इश्क और तनहाई में,
न इश्क कर सके, न पूरी पढ़ाई की, दोस्तों के साथ मिलकर अपनी जिंदगी से ही बेफाई की...!!
तीन हिस्सा जिंदगी बीत गयी, क्या करूं ? क्या ना करूं ? यह सोचने में...
अब जिंदगी बीत जाएगी आंसू पोंछने में....
यह है युवाओं की लाचारी, इसी से बढ़ रही है बेरोजगारी,
इसलिए हम हर मोड़ पर एक नई लड़ाई लड़ रहे हैं..
बुजुर्ग मेहनत कर रहे हैं और युवा मर रहे हैं....!!!

नए कर्मचारियों की व्यथा

मंगल भवन अमंगलहारी, पेंशन बंद किए नेता हमारी,
बहुत ही दुखी है नया कर्मचारी,
सोच-सोच कर बढ़ी इनकी बीमारी, सुगर, बी.पी., ब्लड प्रेशर के मारे,
तन्हा-तन्हा जिंदगी गुजारे,
हर मोर्चे पर लड़ रहे हैं लड़ाई, पुरानी पेंशन दे दो भाई...
नेता विकास की बात हैं करते, जनता महंगाई - बेरोजगारी से मरते,
सबकी अपनी राम कहानी, नेता और पूंजीपती करते मनमानी..
रोज-रोज बढ़ती महंगाई से जनता परेशान हैं..
बढ़ती बेरोजगारी से देश परेशान हैं..
मंत्री, विधायक के चार-चार पेंशन से कर्मचारी हैरान है..
इनके लिए पेंशन वरदान हैं, न कोई कानून हैं न कोई संविधान हैं,
फिर भी मेरा भारत महान हैं..... !!!

हॉकी की जादूगरन

- जयन्त केरकेट्टा
सहायक पर्यवेक्षक

खेल-कूद हमारे मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक हैं, यां यू कहिए की मानव जीवन के संतुलित विकास के लिए खेल अति आवश्यक है। हमारे देश में कबड्डी, हॉकी, लॉन टेनिस, क्रिकेट, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, फुटबाल, शतरंज आदि खेल लोकप्रिय हैं लेकिन भारत का राष्ट्रीय खेल है हॉकी। हॉकी एक ऐसा खेल है, जिसमें दो टीमें एक-दूसरे के विरुद्ध खेलती हुई हॉकी स्टिक की मदद से गोल बॉक्स में गेंद डालकर गोल करने का प्रयास करती हैं। शरीर को संतुलित रखते हुए, कलाई और स्टिक की कुशलता से अच्छी साझेदारी निभाते हुए सटीक निशाने को साधने की क्षमता इस खेल की विशेषता है। अंतरष्ट्रीय हॉकी खेलो में भारत के खिलाड़ियों जैसे अजीत पाल, धनराज पिल्लै, अशोक कुमार, ऊधम सिंह, गगन अजीत सिंह, बलबीर सिंह इत्यादि बेहतरीन हॉकी खिलाड़ियों ने अपना विशेष योगदान एवं लाजवाब प्रदर्शन किया है। और यह लेख भी ऐसे ही एक अनकही-अछूती महिला हॉकी खिलाड़ी असुन्ता की है।

हॉकी का नर्सरी माना जाने वाला झारखण्ड का सिमडेगा जिला, मुख्यालय से लगभग 51 किलोमीटर की दूरी पर जंगल पहाड़ों के झुरमुट के बीच स्थित है - केरसाई प्रखंड का नोंनगाड़ा गाँव । इसी नोंनगाड़ा गाँव में असुन्ता लकड़ा ने 20 नवम्बर 1985 को पिता मरकुस लकड़ा और माता सिलवंती लकड़ा के घर जन्म लिया। असुन्ता लकड़ा की पहली कक्षा तक की पढ़ाई नोंनगाड़ा प्राईमरी स्कूल में हुई और कक्षा दूसरी से पाचवीं तक की पढ़ाई कुरडेग, खालिजोर मिशन स्कूल में संपन्न हुई। टैनसेर संत अन्न बालिका उच्च विद्यालय से छटवीं कक्षा की पढ़ाई करते-करते असुन्ता का गुमला हॉकी सेंटर के लिए चयन हुआ। असुन्ता जब पांच साल की थी तभी से हॉकी खेलने लगी थी ।

वर्ष 1997 में जब सातवीं कक्षा में थी तो रांची स्थित बरयातु हॉकी सेंटर के लिए इनका चयन हो गया और वो रांची चली आयीं । महज तीन सौ की आबादी वाले इस गाँव के उबड़-खाबड़ मैदान में असुन्ता ने अपने पिता से हॉकी का ककहरा सीखी । इलाके में मुर्गा और खस्सी (बकरा) हॉकी टूर्नामेंट का आयोजन नियमित रूप से होता है । मरकुस लकड़ा ग्रामीण स्तर के अच्छे खिलाड़ी रहे हैं । उन्होंने अपने सभी बेटों को अपने साथ मैदान में लाना शुरू किया। भाईयों को मैदान में खेलते देख असुन्ता की दिलचस्पी भी हॉकी में बढ़ी। बांस की बनी हॉकी स्टिक से हॉकी का सुनहरा सफर शुरू हुआ। पिता अपनी बेटी असुन्ता की सनकी लगन और इच्छा शक्ति को देख बेचैन हो उठे और धन बेच कर बेटी के लिए हॉकी स्टिक लाकर इनकी चाहत को पूरा किया। आर्थिक तंगी के कारण असुन्ता को बड़े भाई बिमल के जुते पहन कर मैदान में उतरना पड़ता था । अभाव ग्रस्त जीवन जीने के बावजूद असुन्ता का परिवार पीछे मुड़कर नहीं देखा। हॉकी के प्रति लगाव के बावजूद

असुन्ता ने पढ़ाई नहीं छोड़ी और किसी तरह गोस्सनर कॉलेज रांची से स्नातक की शिक्षा ग्रहण की । असुन्ता को उम्मीद की किरण उस वक्त नजर आई जब 1997 में इनका चयन जिला स्तरीय टीम में हुआ फिर 1998 में इनका चयन जूनियर स्टेट टीम के लिए हुआ । इन्होने अपना पहला राष्ट्रीय मुकाबला इलाहाबाद में खेला। सन् 1999 में अंडर 18 एशिया कप के कैम्प के लिए चयन हुआ। वर्ष 2000 में असुन्ता को भारतीय जूनियर टीम में जगह मिली। असुन्ता ने हांग कांग में आयोजित अंडर 18 अंतर्राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता में पहली बार भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए टीम को चैंपियन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके बाद इन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखी। वर्ष 2000 में असुन्ता भारतीय महिला हॉकी टीम की सदस्य बनीं। असुन्ता की गिनती देश की तेज – तर्रार मिडफिल्डर हॉकी खिलाडियों में होती रही। अब तक लगभग 106 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में देश का प्रतिनिधित्व कर चुकी असुन्ता 2006 में मेलबॉर्न कॉमनवेल्थ में रजत पदक जीतने वाली भारतीय टीम की सदस्य थी। असुन्ता के प्रदर्शन ने सबको चकित कर दिया और इसे उस वर्ष भारत का सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाडी के पुरस्कार से नवाजा गया। टीम का नेतृत्व झारखंड की सुमराय टेटे ने किया था। दक्षिण पूर्व रेलवे में कार्यरत असुन्ता ने वर्ष 2006 में स्पेन में आयोजित विश्व कप हॉकी प्रतियोगिता में भाग किया। वर्ष 2007 में हाँग कांग में आयोजित सीनियर एशिया कप में असुन्ता ने देश का प्रिनिधित्व किया। असुन्ता से सुसज्जित भारतीय हॉकी टीम ने वर्ष 2009 में सीनियर एशिया कप (बैंकोक, थाईलैंड) में उपविजेता बनने का गौरव प्राप्त किया। वर्ष 2010 में सीनियर विश्व कप हॉकी प्रतियोगिता (अर्जेंटीना) में असुन्ता ने अपनी प्रतिभा का फिर लोहा मनवाया।

फरवरी 2011 में रांची में आयोजित राष्ट्रीय खेलों में मेजबान झारखण्ड महिला टीम की कप्तानी असुन्ता लकड़ा ने संभाली तो पुरुष टीम की कमान असुन्ता के बड़े भाई बिमल लकड़ा के हाथों में थी। पुरुष टीम में असुन्ता का एक और भाई बिरेन्द्र लकड़ा भी शामिल थे। असुन्ता की कप्तानी में झारखण्ड महिला हॉकी टीम फाइनल तक का सफर तय किया। फाइनल में हरियाणा से हारकर महिला टीम ने रजत पदक जीता। संयोगवश बिमल लकड़ा की अगुवाई में पुरुष टीम ने भी रजत पदक हासिल किया। तीनों भाई – बहन एशियन और कोमंवेल्थ सहित कई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व किया। असुन्ता की भाभी व बिमल लकड़ा की पत्नी कान्ति बा: ने भी कोमंवेल्थ सहित कई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व किया। असुन्ता की दूसरी भाभी व बिरेन्द्र लकड़ा की पत्नी पुष्पा प्रधान ने भी एशियन खेलों सहित कई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में

देश का प्रतिनिधित्व किया। एक ही परिवार के पांच सदस्यों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की ओर से खेलने का गौरव हासिल करना सचमुच अद्भुत है। वर्ष 2011 में असुन्ता ने एशियन चैम्पियनशिप (चीन), चैम्पियन ट्रोफी और विश्व सुपर सीरिज हॉकी में देश का प्रतिनिधित्व किया। असुन्ता ने सबा अंजुम की कप्तानी में आस्ट्रेलिया का दौरा किया और चार टेस्ट मैच खेले। भारत, मलेशिया और आस्ट्रेलिया के बीच तीन देशीय टूर्नामेंट में भी शिरकत की। नियमित रूप से बेहतर प्रदर्शन के कारण ही असुन्ता को 20 नवम्बर 2011 को इनके जन्मदिन के मौके पर इन्हें भारतीय महिला हॉकी टीम का कप्तान बनाया गया।

सरल व्यक्तिव के साथ–साथ असुन्ता की क्रीड़ाशैली विशिष्ट है। इनमें गजब का आत्मविश्वास तो है ही सकारात्मकता भी कूट–कूट कर भरी है। यही इनकी ताकत भी है और प्रेरणा भी। असुन्ता की खूबियों को रेखांकित करते हुए विशेषक अक्सर यह कहते हैं कि जब मैदान के बीच इनका खेल पूरे शबाब पर होता है, तो टीम अजेय बन जाती है। फारवर्ड खिलाडियों के साथ इनका तालमेल काबिल-ए-तारीफ़ होता है और गेंद सही जगह देने की इनकी काबिलयत आक्रमण की तिखी व्यूह रचना को और धारदार बना देती है। इसके अलावा आगे बढ़कर तेजी से आक्रमण करने और पीछे मुड़कर खूबसूरती के साथ रक्षा पंक्ति संभालने की खूबी इन्हें अपने दौर के सभी खिलाडियों से अलग पहचान दिलाती है। हॉकी इंडिया ने 24 मार्च 2015 को हॉकी खिलाडियों को वार्षिक पुरस्कार देने की घोषणा की है। देश के हॉकी के इतिहास में यह पहला अवसर है जब हॉकी इंडिया ने खिलाड़ियों को पुरस्कार देने की घोषणा की। इस वार्षिक पुरस्कार में असुन्ता लकड़ा के नाम से भी एक अवार्ड रखा गया है और अपकमिंग प्लेयर को असुन्ता लकड़ा अवार्ड से सम्मानित किया जाता है। असुन्ता लकड़ा भारत देश के लिए 15 साल खेली और अभी भारतीय टीम की चयनकर्ता, कार्यकारी बोर्ड की सदस्य एवं एथलेटिक्स कमिटी की सदस्य हैं। लेकिन अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि असुन्ता लकड़ा भारत देश के लिए 15 साल खेली लेकिन अभी तक न भारत सरकार से न ही राज्य सरकार से कोई सम्मान मिला यह बहुत ही दुःख की बात है।

हमारी मातृभाषा हिन्दी ही राजभाषा की अधिकारिणी क्यों

- नूतन कुमारी वर्मा
अतिथि रचनाकार

हमारी मातृभाषा हिन्दी ही राजभाषा की अधिकारिणी क्यों है, इसे समझना होगा। इस हेतु उन्होंने राष्ट्र के सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक पहलुओं के सूक्ष्मता से अध्ययनोपरांत "हिन्दी" को 14 सितंबर 1949 के दिन भारत की संविधान सभा में देवनागरी लिपि वाली हिन्दी को संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ सरकार की राजभाषा घोषित किया। इस घोषणा की पृष्टभूमि में हिन्दी की अपनी अग्रांकित वैशिष्ट्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

हिन्दी सर्वसाधारण की भाषा है। लोकजीवन के छत्रछाया में इसका जन्म हुआ। इसलिए इसके जानने, बोलने एवं लिखने वाले देश के स्वाधीनता के समय ही सकल आबादी के लगभग 43 प्रतिशत थे। अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी भाषा की समझ रखने वाले तो अधिसंख्य थे। यह अंग्रेजी भाषा के सामान नहीं है जिसके बोलने, लिखने एवं समझने वाले बहुत कम लोग होते हैं।

सर्व साधारण/आम जनता की भाषा की प्राण उस भाषा की सरलता, सुगमता एवं इसकी हृदयग्राही होने में होती है। इन सभी विशेषताओं से युक्त हिन्दी ही तो है। अंग्रेजी तो व्याकरण की दृष्टि से सही सही एक लंबे अंतराल के बाद भी नहीं लिख व बोल पाने में सक्षम हो पाते हैं किन्तु हिन्दी पढ़ने एवं सीखने के लिए अल्प समय एवं परिश्रम में ही एक अहिंदी भाषी भी सही-सही हिन्दी बोल एवं लिख लेता है। इसकी झलक हम विज्ञापन व में देख सकतें हैं चाहे वह कोक पेय का प्रचार हो या कपिला पशु आहार का विज्ञापन हिन्दी में सार्थक एवं सुगमता से किसी वस्तु/सेवा के प्रचार प्रसार कर लेते हैं।

इसकी लिपि देवनागरी भी सरल है जिस रूप में बोली जाती है उसी रूप में लिखी भी जाती है। अंग्रेजी की तरह But = बट एवं Put = पुट बाली समस्या नहीं है।

यह एक संपर्क साधक भाषा भी है। 1892 ईस्वी में बाबू भुदेब मुखर्जी ने सही कहा था "भरतवासिर चालित भाषागुलिर मध्य हिन्दी ई प्रधान। क्या पश्चिम क्या पूरब सभी दिशाओं में इसकी गति-मति है इसे सारा देश समझता है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है।

भारतवर्ष छेत्रफल तथा जनसंख्या की दृष्टीकोण से ही विशालतम नहीं है वरन भाषओं की दृष्टी से भी काफी समूह है यहाँ भाषाएँ एवं बोलियाँ हजारों में है। बाईस भाषाएं तो संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल कर ली गई है जिसमे बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली को 2004 में जोड़ा गया था। किन्तु अनेकता में एकता

का स्वर निनादित होता है तो वह है केवल राजभाषा हिंदी में जिसे भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र तथा धर्म, सम्प्रदाय एवं भाषा वाले लोगों ने पल्लवित एवं पुष्पित करने में अच्छा योगदान किया है जिसमें पंजाब के बाबा गोरखनाथ, महाराष्ट्र के नामदेव, तुकाराम एवं मराठी पत्रकार श्री लक्षमण नारायण गर्दे, श्री बाबु राव विष्णु पराड़कर तो फिर अन्यान्य मुस्लमान विद्वान जैसे अब्दुल रहमान सूफी संत हजरत निजामुद्दीन, आमिर खुसरों ठाट मालिक मुहम्मद जायसी प्रमुख है।

हिंदी व्याकरण की दृष्टि कोण से भी सरल है। इसमें क्रियायों सर्वनामों, विशेषणों, विभक्तियों और अव्यायों के सामान्य प्रयोग में संस्कृत आदि भाषा की जटिलता नहीं वरन सरलता का समावेश है।

हिंदी का जन्म उत्तर भारत में हुआ और नामाकरण ईरानियों एवं भारत के मुसलमानों ने किया। इससे यह स्पस्ट है कि इसपर किसी की थाती नहीं है सबका समान रूप से अधिकार है। अतः इसे आम प्रचलन में लाना आसान सिद्ध हुआ।

इसके अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि हिंदी जो अपने जन्म के हजार साल पुरे होने के बाद भी विकास पथ पर अग्रसर है और इसी वजह से आज या किसी भी दूसरे देश में राज्य भाषाओं की तुलना में कम नहीं है।

इसकी अपनी विलक्षण गुणों के कारण इसमें राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक,शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक सभी प्रकार के कार्य व्यव्हार को सफलतापूर्वक संचालित किया जाता है।

उपर्युक्त विन्दुओं से यह स्पष्ट है कि मातृभाषा हिंदी एकमात्र राजभाषा की अधिकारिणी है। यह विविध भाषा-भाषी तथा अनेकानेक धर्म सम्प्रदाय वाले इस विशाल देश के राजकाज में एकरूपता लाने, रास्ट्रीय अखंडता/एकता बनाए रखने के लिये तथा केन्द्रीय कार्यालयों में एक सुनिश्चित आकारवाली (मानक) एवं सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता को पूरा करने वाली भाषा है। इन्हीं सब विशिष्टताओ से सुशोभित होने के कारन हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला है, ताकि अखिल भारतीय स्तर पर भाषा एवं वर्तनी का प्रयोग समान रूप से हो सके।

हम सब भारतवासी को अपनी इस अतिविशिष्ट भाषा के प्रति इमानदार होते हुए इसके उन्नयन हेतु लगातार प्रयास करते रहने में ही शान की बात होगी। भारतेंदु हरीशचंद्र ने भी कुछ ऐसा ही सन्देश हम सबों को अपनी निम्न कविता के अंश के जरिये दिया है :-

निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल ।
बिनु निजभाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।।

•●•

एक इंच मुस्कान

- चंदन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

छोड़ दी हमने कितनी निशानी,
बीता समय, बीती जवानी पर मेरी है एक बात खास,
करे जो कोई उपहास तो हो जाए मुझे आभास।
भाव चेहरे कि बनी पहचान मेरी
एक इंच की मुस्कान मेरी
वो गुजरा जमाना, यादें पुरानी
बनाई हमनें थी, कितनी कहानी
वो मेरे दोस्त जो होते थे चार
मिल बैठ कर बाते करते हजार
फिर सिकुर गई हंसी मेरी, बन गई यही पहचान,
एक इंच मुस्कान।
पद बदला, बदला भाव
कर दिया कितना बदलाव
स्कूटर से गिर, हो गया था बदहाल
और लोग सोंचते है, अभी तक क्यूँ है पैदल चाल
पैदल चाल होते हुए भी 'हूँ' समय पाबंद
गाड़ी वालों कि गति पछाड़, लेता मै आनंद
छोड़ कितने घरेलू काम, बनाया कार्यालय मे कीर्तिमान
फिर क्यूँ न रहे मुझे अभिमान
चाहे याद करे कोई, मेरी लेके, काम का नाम
पर यही मेरी पहचान, एक इंच की मुस्कान।

मुझे नींद नहीं आती (काम के कारण)

काम पहचान बनी, मेरी इस कदर से
कि लोग याद करते है, बातों बातों में,
पर मुझे नींद नहीं आती रातों मे।

मुझे नींद नहीं आती रातों मे, तो कर लेता हूँ, कुछ काम
पर गलत ना समझिए मुझको, जब भेजूँ ग्रुप मे व्हाट्सप्प पैगाम
मकसद होता याद दिला दूँ
काम के डर से सबकी चैन उड़ा दूँ, कर दूँ नींद हराम

पर गलत ना समझिए मुझको, जब भेजूँ ग्रुप मे व्हाट्सप्प पैगाम
बैठूँ रातें तारे गिन देखूँ हुए कितने मैसेज सीन
बीतती रातें पहर चार कम काम की बाते हजार
उठ कर जल्दी आता काम पर
देखूँ यहाँ भी आते लोग आराम कर
समझ मे आता लोगों को, जब दौड़ते आता अनूप–थापा
पड़ता जब 2.20 का छापा
फिर दिन जाती चर्चा मे बीत
गाती गुनगुनाती बिरहा के गीत
और लोग याद करते है बातों बातों मे,
पर सोचिए क्यूँ मुझे नींद नहीं आती रातों मे।।

चीर-हरण

- जितेन्द्र कुमार वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, भिलाई

फिर हुआ है चीर हरण
धर्म पर अधर्म का अतिक्रमण
धुंधली हुई संस्कार की आभा
चीख रही है कुरुसभा
भीष्म द्रोण मूक बने है
इस अधर्म में सभी रमे है

फिर अस्मत लूटी है नारी की आज
फिर हुई मानवता शर्मसार
कलंकित हुआ मेरा समाज मेरा देश
कब बंद होगा यह अत्याचार
क्यों कोई दामिनी खड़ी न होगी
अपनी दुर्दशा पर वह भी रोई होगी

जब शासन है धृतराष्ट्र
जब तक गांधी है समाज
दुर्योधन फिर बच जाएंगे
अपनी बर्बरता दिखाएंगे
कलयुग में केशव ना आएंगे
नारी का मान ना बचाएंगे

हमें संकल्पित होना होगा
सुदर्शन चक्र चलाना होगा

कलियुग में जगन्नाथ

- श्री मनमोहन प्रधान
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार चारों पवित्र पावन धामों में श्रीक्षेत्र जगन्नाथ धाम पुरी अन्यतम है। पुरी भारतवर्ष के पूर्व दिशा में बंगाल की खाड़ी के किनारे अवस्थित है यहां पर श्री जगन्नाथ का भव्य मंदिर स्थित है। इस मंदिर में श्री हरि विष्णु उनके अग्रज बलराम, बहन सुभद्रा के साथ जगन्नाथ के नाम से पूजे जाते हैं। पौराणिक और किंवदंती के अनुसार कालान्तर में एक मंदिर विलुप्त होने के पश्चात पुनः मंदिर का निर्माण भिन्न-भिन्न राजाओं द्वारा करावाया गया। आधुनिक समय स्थित मंदिर 12 वीं शताब्दी में राजा श्री अनंत वर्मन चौड़गंग देव के द्वारा निर्माण कार्य आरंभ हुआ था एवं मंदिर का निर्माण कार्य संपूर्ण तृतीय अनंग भीम के द्वारा किया गया। । प्रभू श्री जगन्नाथ और श्रीक्षेत्र का महात्मय का स्कंध पुराण में विस्तृत वर्णन किया गया है।

जगन्नाथ देव की अपूर्ण आविर्भाव के बारे में एक रोचक तथा महान गाथा है। द्वापर युग के अंत में कलयुग प्रवेश करने के समय में युगराज कलि ने श्री विष्णु जी से एक वचन मांगा था, उन्होंने श्री विष्णु से कहा "भगवान कलयुग में अन्याय अत्याचार बहुत बढ़ जाएगा यही कलयुग का ही प्रभाव है"। अगर आपके पास आयुधों के साथ आपका हाथ पैर होगा तो आप तुरंत उसका दमन करने के लिए निकल पड़ेंगे और मेरा प्रभाव शून्य हो जाएगां। तब कलयुग का क्या अर्थ रह जाएगा प्रभु?" श्री विष्णु कुछ समय मौन रहे, स्मीत हास्य देकर कहा "आखिर तुम क्या चाहते हो कलि, खुलकर बताओ।" कलि महाराज बोले, "भगवन मैं चाहता हूँ कि कलयुग में ना आपका हाथ होगा, न आपका पैर, कान भी नहीं होगा और आप कुछ बोल भी नहीं पाएंगे सिर्फ आपका सिर, दो बड़ी-बड़ी आँखें होंगी जिसमें सिर्फ मेरे प्रभाव में सारे संसार में जो सब घटेगा उसका सिर्फ साक्षी बनकर कलयुग के अंत तक आपको देखना होगा। श्री विष्णु ने कलि महाराज से कहा, "तथास्तु" आपकी यह इच्छा पूर्ण होगी। मैं कलयुग में भ्राता बलभद्र, भगिनि सुभद्रा के साथ नीलकंदर पर्वत पर अपने वचनों के अनुसार स्वरुप में जगतवासी को दर्शन दूंगा।

सपने हुए पूरे

- श्री कमल कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, शाखा कार्यालय- भिलाई

हमारे देश में लाखों बच्चे हर साल NEET Exam की तैयारी करते हैं यह Exam Medical College में जाने के लिए दिया जाता है। कई बच्चे प्रथम बार में ही पास हो जाते हैं तथा कई बच्चे तीन-चार बार परीक्षा देकर भी 2-3 marks से इस दौड. में पीछे रह जाते हैं इससे इस Exam में कितना Competition है, इसका पता चलता है। मेरी बेटी का भी सपना था डॉक्टर बनने का जिसके लिए मेरी बेटी ने भी अपने सपने को संजोएं NEET Exam के लिए तैयारी 10वीं कक्षा से ही शुरू कर दी थी। 12वीं के साथ-साथ NEET Exam का तैयारी करना बहुत ही मुश्किल था उसके ऊपर दोगुना दबाव (Pressure) था वह 12वीं में भी Result अच्छा रखना चाहती थी साथ ही साथ वह NEET में भी 650 से अधिक अंक लाना चाहती थी, इसलिए हमने उसे कोचिंग संस्थान में प्रवेश दिलाया जहाँ उसकी NEET की तैयारी हो सके लेकिन वहाँ भी उसे Pressure ही मिला क्योंकि कोचिंग संस्थान वाले भी अपना सर्वश्रेष्ठ (best) देना चाहते हैं जिसके लिए वह भरपूर प्रयास भी करते हैं लेकिन इन सबके बीच बच्चों की परेशानी कोई नहीं समझ पाता क्योंकि उनके ऊपर इतना पढ़ाई का Pressure हो जाता है कि बच्चे की स्थिति दयनीय हो जाती है। मेरी बच्ची भी उसी स्थिति से गुजर रही थी, उसने सब जगह आना जाना बंद कर दिया क्योंकि पढ़ाई बहुत ज्यादा होती है। 12वीं के Result में उसने अच्छे अंक प्राप्त किए उसके बाद उसने अब NEET के लिए तैयारी और तीव्रता के साथ शुरू कर दी। अब वह 8 घंटे की नींद के बजाय सिर्फ 4 घंटे ही सोती थी। वह किसी भी समारोह में नहीं जाती थी यह सब देखकर हमने भी सब जगह आना-जाना बंद कर दिया क्योंकि यह सफलता सिर्फ मेरे बच्ची के लिए ही नहीं हमारे लिए भी बहुत बड़ी होने वाली थी इसीलिए हमारा योगदान एवं त्याग भी जरुरी था। हम मध्यम वर्गीय लोगों को अपने बच्चों को Doctor बनाना बहुत ही बड़ी बात होती है, मैं अपनी बेटी का Govt. College में admission करवाना चाहता था जिसके लिए मेरे दिमाग में भी Pressure था, इस Pressure को कभी-कभी मैं अपने बच्चे को भी दे देता था। जैसे-जैसे परीक्षा की तारीख करीब आने लगी वैसे-वैसे हमारे दिल की धड़कन भी बढ़ने लगी, क्योंकि यह Exam पूरे दो साल की मेहनत का सवाल था। इसलिए मेरे बच्ची ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी फिर आया exam का दिन, उस दिन सड़कों पर काफी भीड़ थी क्योंकि सभी parents अपने बच्चों को Exam Hall तक छोड़ने आए हुए थे मैंने देखा वहाँ हर एक Parents की मनः स्थिति बहुत खराब थी जिसे मैं लिख कर बता भी नहीं सकता। मेरी बेटी Exam centre के अंदर चली गई लेकिन मेरे मन में हजारों सवाल उठ रहे थे कि पेपर कैसा आया होगा? क्या वह 650 से ज्यादा अंक प्राप्त कर पायेगी और न जाने कितने सवाल उत्पन्न हो रहे थे।उस दिन मेरे लिए तीन घंटे का समय तीन युग जैसा बीत रहा था। जैसे ही Paper खत्म हुआ सब बच्चे

बाहर निकलते दिखे कुछ बच्चे खुश थे तो कुछ दुखी यह देखकर मेरा मन घबराने लगा लेकिन मुझे मेरी बेटी पर तथा उसकी मेहनत पर पूरा विश्वास था। जैसे ही वह मुझे दिखी, उसने खुशी से यह कहा, "600 above" यह सुनकर मेरी आँखें नम हो गई और मैं रोने लगा। मैंने रिश्तेदारों को यह बात बताई, सबने कहा बच्ची की मेहनत रंग लाई है लेकिन यह खुशी ज्यादा दिन तक हमारे पास रह नहीं पाई क्योंकि TV पर Re-NEET Exam के बारे में आने लगा यह सुनकर हम दंग ही रह गए क्योंकि उस स्थिति से निकलने के बाद पुनः उस स्थिति में जाने की कल्पना करके ही मेरा मन दहल उठा।

Parents होने के नाते मैंने उसे पुनः पढाई शुरू करने के लिए प्रेरित किया लेकिन मेरी बेटी की मन:स्थिति यह बन चुकी थी कि Re-NEET नहीं होगा, इसलिए वह निश्चिंत थी, लेकिन मेरे मन में डर था इसलिए मैं उच्चतम न्यायलय की सुनवाई शुरू से अंत तक सुनता था । मेरा मन किसी काम में नहीं लग रहा था बस उसका परिणाम सुनना चाहता था लेकिन सुनवाई लगातार बढ़ रही थी और मेरी स्थिति की कल्पना भी मैं लिख कर नहीं बता सकता हूँ और न ही उसे शब्दों में कहा जा सकता है। अभी तक जो रिश्तेदार यह कहते नहीं थक रहे थे कि मेरी बच्ची ने बहुत मेहनत की है उच्चतम न्यायलय के परिणाम से पहले ही उन्होंनें अपना फैसला तैयार कर दिया और कहने लगे कि पेपर बहुत सरल आया था इसलिए अधिक बच्चे 600 से अधिक अंक लाए हैं। यह उनकी छोटी सोच थी लेकिन मैं अच्छी तरह से जानता था कि उसने अपनी खुशी, इच्छा, खेलना, सोना हर एक चीज का त्याग करने के बाद ही इस मुकाम तक पहुंची थी। अंत में वह घड़ी भी आ गई जब उच्चतम न्यायलय ने अपना फैसला सुनाया कि Re-NEET नहीं होगा यह सुनकर मेरी आँखो के आँसू गिरने लगे और हम सभी खुशी से उछलने लगें क्योंकि अब हमें वास्तविक सफलता मिली थी जिसका मुझे बेसब्री से इंतजार था जैसे चातक पक्षी स्वाति नक्षत्र के बूंदो की प्रतिक्षा करता है लेकिन यह प्रतीक्षा इतनी लम्बी होगी, यह मैंने सोचा भी नहीं था, न इसे लिखकर ही व्यक्त कर सकता हूँ।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि मेरी बेटी ने अपने सपने नहीं बल्कि मेरे सपने को भी पूरा किया है ।

हिन्दी पखवाड़ा की कुछ झलकियां

महानिदेशक महोदय का संबोधन

सहायक निदेशक द्वारा मंच संचालन, मंच पर उपस्थित महानिदेशक महोदय एवं उपनिदेशक महोदय

राजभाषा के प्रागामी प्रयोग पर रिपोर्ट प्रस्तुत करती कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह में काव्य पाठ करते प्रतिभागी

काव्य पाठ

आशुभाषण का आयोजन

आशु भाषण की झलकियां

हिंदी पखवाड़ा में आनंद लेते हुए कार्यालय के दर्शक गण

महानिदेशक महोदय विजेताओं को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए।

नगर राजभाषा की अर्धवार्षिक बैठक में भाग लेते हुए नराकास के अधिकारीगण

राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने हेतु नराकाश द्वारा विशि पुरस्कार

सभी कार्यालयों के प्रमुख को स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए

हिंदी पखवाड़ा के अनुसरण में सुंदर चित्रकारी का प्रदर्शन

अनुष्का सिंह

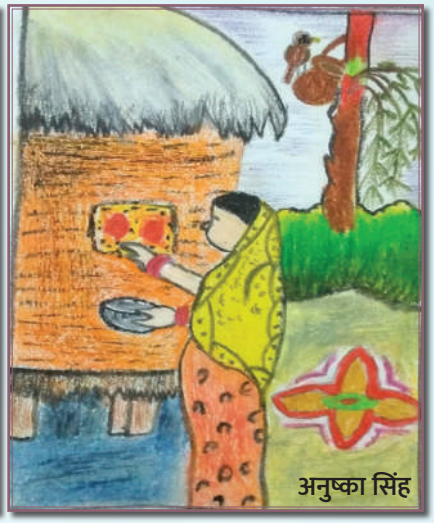
अनुष्का सिंह

अनुष्का सिंह

अनुष्का सिंह

आर्यन सिंह

आर्यन सिंह

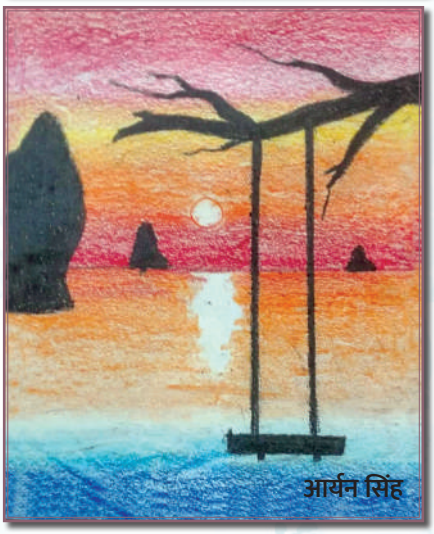
आर्यन सिंह

सुश्री अनुष्का सिंह

सुपुत्री मिथिलेश कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/प्रशा.

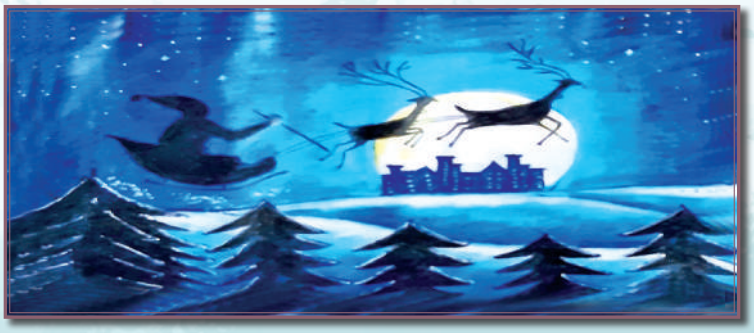

आर्यन सिंह

सुपुत्र मिथिलेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/प्रशा.

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

526_(0825)_Anapurna Press and Process 6287999194

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात),

ऑडिट - II भवन, रांची